परमयोगेश्वर स्वयंभू श्री देवपुरीजी महादेव

कैलाशपति ने कैलाश से हिमालय बद्रीनाथ धाम की ओर प्रस्थान किया। वहाँ दुर्गम पहाड़ों के बीच अपने श्री शम्भू पंच अटल अखाड़े में पहुंचे, वहां पर परम तपस्वी, साक्षात् अलख पुरुष श्री अलखपुरीजी महाराज से मिले। दोनों ईश्वरीय विभूतियों का मिलन विश्व के लिए वरदान रूप था।

भगवान शिव ने श्री अलखपुरीजी से कहा कि मैं कुछ समय के लिए संसार में दु:खी जीवों के उद्धार के लिए प्रकट होना चाहता हूँ सो आप आज्ञा देवें। आप तो जगतगुरु हैं, मैं भी गुरु ही मानता हूँ। इस पर महायोगी श्री अलखपुरीजी महाराज ने मधुर मुस्कान के साथ कहा, कि आप तो स्वयं शिव हैं, समर्थ हैं, सर्वशक्तिमान है, जो चाहे सो कर सकते हैं, आप देवाधिदेव महादेव हैं। आज से आपका नाम श्री देवपुरीजी महादेव होगा।

(जैसा कि श्री महाप्रभुजी ने अपने "अनुभव प्रकाश" में पृष्ठ नं. 11-12 पर लिखा है।)

चौपाई -

श्री अलखपुरीजी अवधूत अनादि। अटल अखाड़े अनहद गादी॥
उन मून सेव श्री देवपुरीजी साजे। ज्ञान वैराग्य दियो है ताजे॥

दोहा -

हंस अनादि आत्मा श्री अलखपुरीसा निर्वाण।
श्री देवपुरीजी महादेव श्री दीप हरि दर्शन जाण।

उसके बाद श्री देवपुरीजी महादेव राजस्थान के आबू पर्वत के लिए प्रस्थान कर गये। वहाँ पर अदृश्य रूप में रहने लगे। उस समय भारत में अंग्रेजों के संरक्षण में राजाओं का राज था।